Series SHC/1

Code No. / कोड नं. **29/1/1**

Roll No. / रोल नं. | | | | | | | |

Candidates must write the Code on the title page of the answer-book.
विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका में कोड नं. अवश्य लिखे।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 15 प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- Please check that this question paper contains 7 printed pages.
- Code number given on the right hand side of the question paper should be written on the title page of the answer-book by the candidate.
- Please check that this question paper contains 15 questions.
- **Please write down the serial number of the question before attempting it.**

हिन्दी (ऐच्छिक)

HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

Time allowed : 3 hours] *[Maximum marks: 100*

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए और भाषा-शैली पर टिप्पणी भी लिखिए : 10

काल इतना विशाल है और पृथ्वी इतनी विस्तृत है कि बड़े-बड़े सम्राटों की कीर्ति फ़ीकी पड़ जाती है। जिनके जीवन और मरण के अवसर, एक ही साँस में, संसार को आनन्द के कोलाहल और शोक के सन्नाटे से भर सकते हैं, वे ही बड़े नहीं हैं। बड़े वे भी हैं, जिनका जीवन-दीप सूने में ही बुझ गया है, किन्तु जिनकी अमर ज्योति एक के पास से दूसरे के पास जाकर सबको आलोकित करेगी, धीरे ही धीरे सबके अनुभव में आएगी, सबको प्रकाश देगी।

अथवा

मैं अपने विरोधियों के नाम लेता गया और वह उन्हें निन्दा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मज़दूर लकड़ी का लट्ठा खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता

है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक करके खिसकाए और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था ! दुश्मनों को रणक्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को ऐसा ही सुख होता होगा।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर लिखिए : 4+4+4=12

(क) 'दिल से गए दिल्ली में' नामक निबन्ध में लेखिका ने शरणार्थियों की मानसिकता को 'हमेशा आक्रामक और बाज़ार से साँठ-गाँठ करने वाली' क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'पर्यावरण या विकास और अस्तित्व या विनाश' निबन्ध के माध्यम से लेखक ने आज के राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन के संदर्भ में कौन-कौन सी समस्याएँ उठाई हैं?

(ग) रामचन्द्र शुक्ल ने क्रोध और बैर के अंतर को काल-सापेक्ष क्यों माना है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'भीष्म को अवतार न मानना ठीक ही हुआ' पाठ के आधार पर इस कथन की तर्कसंगत समीक्षा कीजिए।

3. 'मन में प्रतिकार भावना होने के बावजूद बूढ़े भगत द्वारा डॉ. चड्ढा के लड़के की प्राण-रक्षा करना उसकी सरलता और कर्त्तव्य-बोध का प्रमाण है।' इस कथन का 'मंत्र' कहानी के आधार पर विवेचन कीजिए। 3

अथवा

'मेरी जीवन यात्रा : दो चित्र' पाठ के आधार पर लेखक के चरित्र की उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनसे आप प्रभावित हुए हों।

4. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए और काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए : 10

कुंदन को रंग फीको लगे, झलके अति अंगन चारु गुराई।
आँखिन में अलसानि चितौनी में, मंजु बिलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों-ज्यों निहारिए नेने ह्वै नैननि, त्यों-त्यों खरी निकरै-सी निकाई।।

अथवा

जलता है यह जीवन-पतंग

    जीवन कितना ? अति लघु क्षण,

    ये शलभ पुंज में कण-कण,

    तृष्णा वह अनलशिखा बन –

    दिखलाती रक्तिम यौवन !

        जलने की क्यों न उठे उमंग ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर लिखिए : 3+3+3=9

(क) 'खुरदरे पैर' कविता में कवि को क्यों लगता है कि वह रिक्शा चालक के बिवाई पड़े पैरों को भूल नहीं पाएगा ?

(ख) 'पहचान' कविता में 'लैंप-पोस्ट तो मैं भी जला सकता हूँ।' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'किसको नमन करूँ मैं ?' कविता में कवि भारत के किस स्वरूप को नमन करना चाहता है ?

(घ) भक्त कवि रैदास के पद की निम्नलिखित पंक्ति का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

'जिनि पिया सार-रस, तजे आन रस, होइ रसमगन, डारे विषु खोई।'

6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' **अथवा** तुलसीदास के जीवन और रचनाओं का परिचय देते हुए उसके काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। 6

7. ''कथानक की दृष्टि से 'रंगभूमि' एक सफल रचना है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 5

अथवा

'रंगभूमि' उपन्यास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महागाथा है।'' इस कथन के आलोक में उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

8. 'रंगभूमि' के आधार पर सूरदास अथवा सोफ़िया की किन्हीं चार प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

9. '' 'रंगभूमि' उपन्यास का उद्देश्य गाँधीयुग के मूल्यों को पाठकों के सम्मुख प्रतिपादित करना है।'' इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए। 5

अथवा

'रंगभूमि' उपन्यास की भाषा-शैली की चार प्रमुख विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

10. रीतिकालीन काव्य की तीन प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए इस काल के किसी एक प्रसिद्ध कवि तथा उसकी एक प्रसिद्ध काव्य-रचना का नामोल्लेख कीजिए। 4

अथवा

भक्तिकाल के साहित्य की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए कि इस युग को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है ?

11. छायावादी **अथवा** प्रयोगवादी कविता के चार प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए उस काव्यधारा के किसी एक कवि और उसकी एक प्रसिद्ध काव्यकृति का नामोल्लेख कीजिए। 5

12. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध **अथवा** हिन्दी कहानी के क्रमिक विकास का परिचय दीजिए। 4

13. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : 12

(क) जीवन-मूल्य और सहित्यकार का दायित्व

(ख) परिवार — संस्कारों की आधारशिला

(ग) महानगरों में बढ़ता प्रदूषण : समस्या और समाधान

(घ) लोकतन्त्र और सूचना का अधिकार

(ङ) भारत : एक उभरती आर्थिक शक्ति

14. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

विज्ञान के इस युग में इंसान संकुचित शक्ति से यदि व्यवहार करे तो अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेता है - ऐसा विनोबा भावे हमेशा करते थे। 'विज्ञान तथा आत्मज्ञान' - ये दोनों मनुष्य-रूपी पक्षी के दो पंख हैं। बाह्य सृष्टि के ज्ञान का अर्थ है विज्ञान और अंतर्सृष्टि के ज्ञान का अर्थ है आत्मज्ञान। शरीर और आत्मा दोनों का विकास होना जरूरी है। इसके लिए मनुष्य को विज्ञान तथा आत्मज्ञान, दोनों का सहारा लेना पड़ेगा। मोटर में दो यंत्र होते हैं - दिशा-दर्शक और गतिवर्धक। उसी तरह से आत्मज्ञान मनुष्य के लिए दिशा-दर्शक का काम करेगा। उस दिशा में गति बढ़ाने का काम विज्ञान करेगा तो पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आएगा।... आप विनोबा की बातें भले ही न मानें पर एटम बल की बात तो मानेंगे न ! वह कह रहा है कि इंसान अगर प्रेम, अहिंसा की राह नहीं लेगा तो सर्वनाश हो जाएगा। परमाणु अस्त्र तो इंसान से कहते हैं कि लड़ाई मत करो - दुनिया में आज सभी शांति चाहते हैं। पर उसे हासिल कैसे किया जाए, यह बात लोगों की समझ में नहीं आती। छोटे-मोटे झगड़े और लड़ाइयाँ प्रेम और मैत्री से, समझ-बुद्धि से, परस्पर की सद्भावना से मिटाई जा सकती हैं।

(क) संकुचित शक्ति से इंसान के व्यवहार करने से विनोबा जी का क्या आशय है ? 1

(ख) मनुष्य के शरीर और आत्मा दोनों के विकास क्यों जरूरी हैं ? 1

(ग) पृथ्वी पर स्वर्ग लाने के लिए मानव को क्या करना होगा ? 1

(घ) परमाणु अस्त्र मनुष्य को क्या समझाते हैं ? 1

(ङ) छोटे-मोटे विवादों को सुलझाने के क्या उपाय हो सकते हैं ? 1

14. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जा अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे।
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे।
आंधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अंधड़ पर उछल चढ़ो रे।
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे।
स्वर में पावक यदि नहीं, वृथा वंदन है,
वीरता नहीं, तो सभी विनय क्रंदन है।
सिर पर जिसके असिघात-रक्त-चंदन है,
भ्रामरी उसी का करती अभिनन्दन है।
मानवी रक्त से सभी पाप धुलते हैं,
ऊँची मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं।

(क) ''स्वातंत्र्य .... भीतरी गुण है'' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

(ख) स्वाधीन बने रहने के लिए किन विशेषताओं का होना आवश्यक बताया गया है ? 1

(ग) स्वर में पावक होने का आश है? उसके बिना वंदना व्यर्थ क्यों है ? 1

(घ) मानवी रक्त से पाप धुलने की बात कवि ने क्यों कही है ? 1

(ङ) प्रस्तुत काव्यांश का मूल भाव क्या है ? 1